INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2023; 5(1): 05-08
Received: 05-10-2022
Accepted: 11-11-2022

डॉ. पुनम कुमारी
विभागाध्यक्ष, सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखंड, भारत

सोनल कुमारी
शोधार्थी, इतिहास विभाग, राधागोविंद विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखंड, भारत

Corresponding Author:
डॉ. पुनम कुमारी
विभागाध्यक्ष, सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखंड, भारत

पारसनाथ जैन धार्मिक स्थल के रूप में: एक समीक्षा

डॉ. पुनम कुमारी, सोनल कुमारी

सारांश
जैन धर्म प्राचीन धर्मों में से एक है जैन तीर्थंकरों की संख्या 24 है जिनमें से कहा जाता है कि 20 तीर्थकर पारसनाथ पहाड़ी जिसे सम्मेद शिखर कहा जाता है वहां पर निर्वाण प्राप्त किया था। पारसनाथ जैनियों के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। पारसनाथ झारखंड के गिरिडीह जिले में स्थापित है। पारसनाथ जनजातियों के लिए भी धार्मिक स्थल है माना जाता है यहां के जनजाति मारंग बुरू के रूप में इसकी पूजा करते हैं। सालों भर यहां सेनानियों की भीड़ लगी रहती है। विशेषकर जैनी इस पवित्र स्थल की यात्रा सालोंभर करते हैं। प्राकृतिक छटा बिखेरे पारसनाथ पहाड़ी अत्यंत ही सुंदर प्रतीत होता है। यह पहाड़ी मोक्षदायिनी है संभवत यही कारण है कि विभिन्न जैन तीर्थंकर ने इस स्थान को निर्वाण के लिए चुना था। पारसनाथ पहाड़ी के नीचे मधुबन नामक स्थान है यहां कई जैन मंदिर स्थित है। जैन मंदिरों के वास्तु कला अति सुंदर है। यह स्थल जैनियों के साथ-साथ विभिन्न धर्मावलंबी के लिए अपार श्रद्धा का केंद्र है।

कूटशब्द: तीर्थंकर, जिनालय, टोंक चतुर्याम धर्म, केवल्य त्रिपिटक

प्रस्तावना
जैन धर्म भी भारत के प्राचीन धर्मो में से एक है जैन धर्म की स्थापना इसके प्रथम तीर्थंकर ऋषभ देव के द्वारा किया गया था| तीर्थंकर का अर्थ जैन धर्म के अनुसार धर्म गुरु होता है जैन शब्द की उत्पति शब्द "जिन"से हुआ है जिसका अर्थ होता है इन्द्रियों में विजय पाना| जैन धर्म के कुल 24 तीर्थंकर हुए जिसमे सबसे पहला ऋषभदेव है और सबसे अंतिम महावीर स्वामी है जैन धर्म के धार्मिक स्थल को जिनालय कहा जाता है| जैन धर्म बौद्ध धर्म से पहले का है| उदयगिरी जूनागढ़ आदि के शिलालेखों से भी जैन मत की प्राचीनता सिद्ध होती है| जैनधर्म श्रमण परम्परा से निकली है तथा इसके प्रवर्तक हैं 24 वें तीर्थंकर जिनमे प्रथम भगवान ऋषभ देव (आदिनाथ) तथा अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी है | जैन धर्म की प्राचीनता सिद्ध करनेवाले अनेक उल्लेख साहित्य और विशेषकर पौरोणिक साहित्य प्रचुर मात्रा में है | श्वेताम्बर और दिगम्बर जैनपंथ के दो संप्रदाय है |
नीतिशास्त्रों में वर्णन है कि जैनधर्म के 24 तीर्थंकरों में से प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ अर्थात भगवान ऋषभदेव ने कैलाश पर्वत पर 12 वें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य ने चम्पापुरी, २२ वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ ने गिरनार पर्वत और 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर ने पावापुरी में मोक्ष प्राप्त किया था शेष 20 तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ ने भी इसी तीर्थ में कठोर तप और ध्यान द्वारा मोक्ष प्राप्त किया था|
अत:भगवान पार्श्वनाथ की टोंक इस शिखर पर स्थित है |[1]

जैन ग्रंथो के अनुसार सम्मेद शिखर और अयोध्या इन दोनों का आस्तित्व सृष्टि के समानांतर है इसलिए इनको शाश्वत माना जाता है | प्राचीन ग्रंथों में उल्लेख है कि यहाँ पर तीर्थंकर और संतो ने कठोर तपस्या व साधना द्वारा मोक्ष प्राप्त किया है | यही कारण है कि जब सम्मेद शिखर से तीर्थयात्रा शुरू होती है तो हर तीर्थयात्री का मन तीर्थकरो का स्मरण कर अपार श्रद्धा ,आस्था 'उत्साह और खुशी से भरा होता है| जो इतनी ऊंचाई पर होंने पर भी बूढ़े बड़े बच्चे सभी जैन श्रद्धालु भी श्री सम्मेद शिखर तक पहुंचते है|[2]

श्री सम्मेद शिखर जी या पारसनाथ पर्वत भारत के झारखण्ड राज्य के गिरिडीह जिले में छोटानागपुर पठार पर स्थित एक पहाड़ी है जो विश्व का सबसे महत्वपूर्ण जैन तीर्थ स्थल भी है| श्री सम्मेद शिखर जी स्थल के रूप में चर्चित इस पुण्य क्षेत्र मे जैन धर्म के 24 में से 20 तीर्थ करों ने यहाँ पर मोक्ष प्राप्त किया था| 1350 मीटर (44 30) फुट ऊँचा पहाड़ झारखण्ड का सबसे ऊँचा स्थान है| यहाँ 23 वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ ने भी निर्वाण प्राप्त किया था| सम्मेद शिखर की उपरी तलहटी पर प्रकृति की गोद पर मंदिरों का नगर मधुबन बसा हुआ है| यहाँ अनेक दर्शनीय स्थल है यहाँ के घुमावदार रास्ते पहाड़ों की सुन्दरता देखते ही बनती है| शिखर पर पहुँच कर सारी थकान मिट जाती है|[3]

इसके अलावे भी मानभूम जैनियों का गढ़ रहा है| पाकवीरा, पवनपूरा,पलामा,बलरामपुर, करा, कतरास में जैनियों के भग्नावशेष आज भी देखे जा सकते हैं| तेल्कुप्पी में जैन संस्कृति का विशिष्ट केन्द्र था| |सिंहभूम के सराक जाति जैन श्रावक है|

जो 20 तीर्थंकर ने इस पहाड़ी पर मोक्ष प्राप्त किया उनमे से प्रत्येक के लिए पहाड़ी पर एक मंदिर बना हुआ है पहाड़ी पर कुछ मंदिर दो हजार साल से भी ज्यादा पुराना है | संथाल इसे देवता कि पहाड़ी को मरंग बुरु भी कहते हैं | वैशाख में पूर्णिमा दिवस पर एक शिकार त्यौहार भी मानते हैं | 20 तीर्थंकर ने इस परस नाथ पहाड़ी पर मोक्ष प्राप्त किया है 23 वें तीर्थंकर के नाम पर इस पहाड़ी का नाम पारसनाथ रखा गया |[4]

पारसनाथ के अलावे गिरिडीह जिले में कई लोकप्रिय आकर्षक पर्यटक स्थल मौजूद है| यह प्रकृति कि गोद में स्थित है जो आगंतुकों के लिए कई दर्शनीय स्थल का विकल्प देती है यह क्षेत्र कई भक्ति स्थानों का केंद्र भी है| जो साल भर यहाँ देखने के लिए तीर्थयात्रियों कि यहाँ भीड़ लगी रहती है| शहर में घुमने के लिए कई लोकप्रिय स्थल है |

1. सम्मेद शिखर जी के रूप में प्रसिद्ध पारसनाथ हिल
2. लंगटा बाबा समाधि स्थल
3. उसरी फॉल
4. खंडोली बांध
5. हरिहर धाम
6. दुखिया महादेव
7. झारखण्ड धाम
8. श्री कबीर ज्ञान मंदिर
9. सूर्य मंदिर

गिरिडीह घनेजंगल से घिरा क्षेत्र है| यह पह्ले हजारीबाग नामक जिले का हिस्सा था | यह क्षेत्र में घने वनस्पति और पहाड़ी तालों से ढका हुआ है | यह क्षेत्र बसे हुए जनजातियों के अधीन था| गिरिडीह जिला उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल के अन्तर्गत पूर्वोतर दिशा में है| जिसका चौहदी उत्तर में जमुई और नवादा जिला (बिहार) स्थित है| जबकि दक्षिण में धनबाद तथा बोकारो जिला है और पश्चिम में हजारीबाग आर कोडरमा जिला है| आज़ादी से पहले यह क्षेत्र हजारीबाग का हिस्सा था| 1556 ईसवी में मुग़ल सम्राट अकबर के सत्ता में आने तक या क्षेत्र कि अनदेखी की गई| अकबर के उतराधिकार के बाद यह क्षेत्र मुग़ल साम्राज्य का हिस्सा बन गया| बाद में 18 वीं शताब्दी की शुरुआत में इस क्षेत्र को हजारीबाग के ब्रिटिश शासन के तहत द० प० फ्रंटियर एजेंसी को छोटानागपुर में बदल दिया| 1947 में गिरिडीह जिला 15नवम्बर 2000 ई० को बिहार राज्य से अलग होकर झारखण्ड राज्य में शामिल किया गया| जिससे गिरिडीह जिला को खनिज के क्षेत्र में महत्व बहुत ज्यादा मिला| गिरिडीह जिला पूरा क्षेत्र ब्रिटिश सरकार के आर्थिक रूप से फायदेमंद हुआ|[5]

गिरिडीह जिला में कुल 15प्रखंड है| झारखण्ड राज्य का यह जिला खनिज अबरख एवं कोयला के लिए प्रसिद्ध है| 4 दिसम्बर 1972 को हजारीबाग जिला के कुछ हिस्सा को काटकर गिरिडीह जिला बनाया गया| राष्ट्रीय राजमार्ग 114a गिरिडीह से होकर गुजरता है| यह जिला 24 डिग्री 11 मिनट उत्तर अक्षांश में स्थित है और 86 डिग्री 11 मिनट पूर्वी देशांतर के बीच में स्थित है| यह 4854 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है|[6]

पारसनाथ विश्वभर का एक महत्वपूर्ण जैन तीर्थस्थल है| हर साल लाखों की तादाद में जैनधर्म वाले लोग पूजा अर्चना करने के लिए आते हैं| यह भारत के मधुबन इलाके में है| इस क्षेत्र को सिद्ध क्षेत्र कहते हैं| जैन धर्म में इसे तीर्थों का राजा भी कहा जाता है| यह एक हिल स्टेशन के रूप में भी जाना जाता है| यह एक हिमालयी पहाड़ जैसा दिखता है इसकी चोटी तक जाने के लिए सिर्फ एक छोटा रास्ता है| पारसनाथ पहाड़ी की तलहटी से लेकर चोटी तक बड़ी संख्या में जैन मंदिरों की

श्रृंखला है| यहाँ एक छोटा मोटा जैनियों का शहर बसा हुआ है इसे मधुवन भी कहते हैं| हरियाली के बीच मंदिर के दर्शन के लिए 1000 से ज्यादा सीढियाँ चढ़नी होती है| तलहटी से शिखर तक यहाँ लगभग 10 km तक की यात्रा पैदल तय करनी होती है| यहाँ पहाड़ी पर 20 तीर्थंकरों के चरण चिन्ह अंकित हैजिन्हें टोंक कह जाता है| यहाँ जैन धर्म के दोनों पंथों श्वेताम्बर और दिग्म्बर मंदिर बने हुए है| ऐसे में इसकी महत्ता ज्यादा बढ़ जाती है| जैन धर्म के अनुयायी इस पहाड़ी को शिखर को सम्मेद शिखर कहते हैं| दुनिया भर के जैन धर्मावलम्बी इस पहाड़ के दर्शन के साथ इस पहाड़ी की परिक्रमा करने भी आते हैं| नीचे से ऊपर चढ़ने पर रास्ते भर बहुत सारे जैन मंदिरों की लम्बी फेरहिस्त दिख जाएगी| जिनमे से हर एक मंदिर का अलग अलग खासियत है ये जैन धर्मालम्बियों के सबसे प्रमुख स्थल है|[7]

यहाँ की यात्रा पैदल करनी होती है क्योंकि दुर्गम पहाड़ी पर वाहन जाने का साधन नहीं है खड़ी ढाल पर खड़ी सीढियाँ के माध्यम से पहाड़ी पर चढ़ना होता है| जो हमारे साहस और धैर्य की भी परीक्षा है| कठिन रास्तो से गुजरने के कारण यह यात्रा काफी मनोरंजक भी लगता है जो यात्री पैदल चलने में असमर्थ है वे डोली का सहारा लेते हैं डोली दो या चार व्यक्ति मिलकर उठाते हैं व्यक्ति के वजन के आधार पर डोली के प्रकार और दाम तय किये जाते हैं| यात्रा करने का सबसे अच्छा समय नवम्बर से फरवरी के बीच होता है क्योंकि पहाड़ो पर चढ़ने में शीत ऋतू में मदद मिलती है| यहाँ कई धर्मशालाएं भी है जो कि काफी कम दामों में उपलब्ध है|यहाँ सालों भर ठंडी हवाएं बहती है यहाँ तक पहुचने के लिए प्लेन और सड़क मार्ग मौजूद है गिरिडीह झारखण्ड या बिहार के रास्तें पहुँच सकते है राजधानी रांची से गिरिडीह कि दुरी 155 km है|[8]

पारसनाथ रेलवे स्टेशन से -25 km

गिरिडीह रेलवे स्टेशन से 39 km

गिरिडीह का अर्थ है "गिरी"का अर्थ है पहाड़ पर्वत और डीह का अर्थ है क्षेत्र या भूमि अर्थात पहाड़ों वाला क्षेत्र झारखण्ड में आदिवासियों की एक बड़ी संख्या हिन्दू धर्म सहित बौद्ध जैन में परिवर्तित हो गई| कुछ लोगों ने उन धर्मों के सिधान्तों को मान लिया जो मनुष्य के बीच जाति को नही मानती| प्राचीन काल में बुद्धवाद, जैनवाद, शैववाद ने एक बहुत बड़ा अवसर दिया कि मनुष्यों के बीच जातिविहीन समाज को गतिशीलता प्रदान किया जाये| जहाँ सिंहभूम और मानभूम की सरक जाति जैन बन गई| छोटानागपुर के सरक जो मुख्यत: मानभूम सिंहभूम और रांची में फैले हैं अपने को मूलत: जैन होने का दावा करते हैं स्थानीय परम्पराए भी टूटे फूटे मंदिरों और मानभूम व सिंहभूम में छोड़े गए ताम्बों के खानों को उनकी वस्तुएं बताते हैं वे स्वयं कहते हैं कि उनके पुरखे व्यापारी थे और पार्श्वनाथ की पूजा करते थे| अभी यह कहना कठिन है कि वे लोग जैन धर्म में दीक्षित होने से पहले किस मूल के थे|[9]

बौद्ध ग्रंथो में जैन धर्म को महात्मा बुद्ध से पूर्व का धर्म माना गया है जैन धर्म की प्राचीनता 1500 ई० पू० स्थापित किया जा सकता है| पार्श्वनाथ के चतुर्याम धर्म का उल्लेख बौद्ध त्रिपिटक में मिलता है और प्राचीन जैन ग्रंथों से ज्ञात होताहै कि महावीर के माता पिता पार्श्वनाथ इस धर्म के अनुयायी थे इसलिए पार्श्व को ऐतिहासिक पुरुष माना जाता है |[10]

डॉ हीरालाल जैन के अनुसार पार्श्वनाथ का चातुर्याम का रूप महावीर के समाजिक धर्म के पूर्व ही प्रचलन में था सिन्धु घाटी के पुरास्थलों से प्राप्त त्रिशूल नग्न मूर्तियों तथा यौगिक आसन में प्राप्त मुद्रा के आधार पर जैन धर्म के समय का सैन्धव सभ्यता से जोड़ने का प्रयत्न किया गया है | मोहनजोदड़ो से प्राप्त त्रिशूल के प्रतीक के आधार पर इस काल से जैन परम्परा के प्रचलन से माना गया है| ऋषभदेव के काल से ही जैन धर्म काआरम्भ भी भागवत पुराण मानता है| इसके अनुसार ऋषभदेव के चरित्र को सुनका राजा अहर्त कलयुग में इस धर्म का प्रचार करेगा| भागवत पुराण का यह विवरण जैन तीर्थंकर ऋषभदेव के वर्णन में मिलता है|[11]

भागवत पुराण के अनुसार –यज्ञ में श्रेष्ठ ऋषियों द्वारा प्रसन्न किये जाने पर ही विष्णुदत्त , परीक्षित ,स्वयं श्री भगवान (विष्णु) महाराज कि नाभि को प्रिय करने के लिए उनकी पत्नी महारानी मेरु देवी के गर्भ में आये| उन्होंने श्रमण ऋषियों से धर्मो को प्रकट करने की इच्छा से इस पवित्र शरीर को धारण किया| श्रमण धर्म की प्राचीनता भारतीय साहित्य में वातरशना ऋषियों के धर्म को प्रकट करती है इसमें कहा गया है कि

> "अथमेवतारो रजासोपव्वुत केव्न्यो पशिक्षनार्थ "भागवत पुराण (5, 3, 20)[12]
>
> जैनी लोग ऋषभदेव को आदि तीर्थंकर मानते हैं तो उन्हें भगवान विष्णु के अवतार मानते हैं| (शिवपुराण 7, 29)[13]

अर्थात भगवान का यह अवतार रजोगुण से युक्त लोगों को केवल्य कि शिक्षा देने के लिए हुआ था हीरालाल जैन के अनुसार यह रजोधारण वृति द्वारा केवल्य प्राप्ति कि शिक्षा देने के लिए हुआ था|

> सायण के भाष्य पर आधारित वैदिक काल में जैनियों कि उत्पति सिद्ध की गई है| (ऋग्वेद 10,

136, 4)[14]
मुनियों वात रशना:पुशंगा बसते भला
वासन्थनु धजियान्ति यद्देवासो अविक्षत
क्षण मदिता मौन येन वाता आतिस्थामा वयम
शरीरे दस्माक्म यूथ भार्तासाम अभिपश्यय |
जैन पुराण भी ऋषभ की जटाओं का वर्णन करता है
वतोद्धता जय स्वास्य रंजुराबुल मुर्तप
वही हरिवंश पुराण में
सप्रलम्बजटाभारभर्जिष्णु (हरिवंश पुराण 9, 20, 4)[15]

इसप्रकार ऋग्वेद, भागवत पुराण तीर्थंकर ऋषभनाथ और उनका नितिन्थ सम्प्रदाय एक ही सिद्ध होता है ऋषभदेव का नाम ऋग्वेद में मिलता है

कर्कदेव वृषभो युक्त आसीद
अवावचित सारथिरस्य केशी

इसलिए ऋग्वेद में उल्लेखित वातरशना मुनियों का निर्ग्रन्थ साधुओं तथा उनके नायक ऋषभ देव केशी के साथ एकीकरण होने से जैन धर्म अति प्राचीन मालूम होता है| (ऋग्वेद 10, 102, 6)[16]
जैन धर्म के तीर्थंकर अजितनाथ का उल्लेख यजुर्वेद करता है| इससे पता चलता है कि इस काल में जैन धर्म एक स्थापित धर्म था इसके पूर्व ही यह ज्ञात हो चुका था क्योंकि अजितनाथ को दूसरा तीर्थंकर माना जाता है| ऋग्वेद के साक्ष्यों के आधार पर प्रथम तीर्थंकर ऋषभ देव का काल स्वीकार किया जाता है इसलिए यजुर्वेद भी ऋग्वैदिक काल से जैन धर्म कि प्रासंगिकता की पुष्टि करता है|
महाभारत जैन धर्म कि प्राचीनता को 1000 ई० पू० बतलाता है इसमें जैन तीर्थंकर नेमीनाथ का उल्लेख हुआ था महाभारत में इन्हें शौरपुर का यादव वंशी कहा गया है| शौरपुर के राजा अंधक–वृष्णि के छोटे पुत्र वासुदेव थे
इनके पुत्र वासुदेव कृष्ण के नाम से जाने जाते हैं इस आधार पर नेमिनाथ और कृष्ण चचेरे भाई ज्ञात होते हैं | कह जाता है कि मथुरा जरासंध के आतंक से तंग था इसलिए शौरपुर के यादव द्वारका में जा बसे| नेमिनाथ का विवाह गिरनशा के राजा उग्रसेन कि कन्या राजुलामती से तय हुआ बारात में उन्हें मांस पकाने के लिए लाये गये पशुओं को देखकर उनमे वैराग्य उत्पन्न हुआ और वे गिरनार पर्वत पर तपस्या करने जा पहुंचे| कैवल्य प्राप्ति के बाद वे श्रमण परम्परा के प्रचार में जुट गए हीरालाल जैन कहते हैं नेमिनाथ के इस अहिंसक प्रवृति को ही इनकी देन माना जाता है महाभारतका काल 1000 के लगभग माना जाता है| डॉ मेहता यही काल तीर्थकर नेमिनाथ का मानते हैं|[17]
इस प्रकार निष्कर्षत: कह जा सकता है कि जैन धर्म एक प्राचीन धर्म इसकी प्राचीनता वैदिक काल तक जाती है कहीं कहीं सिन्धु सभ्यता के प्राप्त अवशेष से भी जैन धर्म कि प्राचीनता सिद्ध करने का प्रयास किया गया है जैन धर्म और पारसनाथ का घनिष्ट सम्बन्ध है पारसनाथ झारखण्ड में स्थित है यहाँ 24 में से 20 तीर्थंकर ने निर्वाण प्राप्त किया जिसके कारण यह स्थल जैनियों के लिए महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है| यहाँ सालोंभर सैलानियों की भीड़ लगी रहती है | यह स्थल ऐतिहासिक होने के साथ साथ रोमांच से भरा पड़ा है| पारसनाथ के आस पास कई ऐसे स्थल हैं जो पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं| पारसनाथ पहाड़ी के नीचे बसा मधुवन में कई जैन मंदिर और धर्मशालाएं हैं जो अपनी कलात्मकता के लिए जानी जाती है|

संदर्भ

1. जैन हीरालाल, जैन धर्म का उद्भव व् विकास पृष्ठ 211.
2. जैन, बलभद्र, भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ, बम्बई, 1975, पृष्ठ 30.
3. वही 47.
4. बनर्जी, गोविन्द मान, झारखण्ड कि ऐतिहासिक रुपरेखा, एडुकेशन प्रिंट, रांची पृष्ठ 46.
5. सिंह,डॉ सरोज कुमार, झारखण्ड प्रदेश कि भौगोलिक कथा, राजेश प्रकाशक, 2016 पृष्ठ 38.
6. बिरोत्तम, बी. झारखण्ड की इतिहास एवं संस्कृति, बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 2003, पृष्ठ 455.
7. बसु, नागेन्द्रनाथ, चौबीस तीर्थंकरों की जीवनी, इंडियन कल्चर vol 3 जयपुर पृष्ठ 319 .
8. ए०बी० पारसनाथ, गिरिडीह जिला झारखण्ड सरकार
9. पूर्वोक्त, झारखण्ड की ऐतिहासिक रूपरेखा पृष्ठ 46.
10. चन्द्र, कैलाश, जैन धर्म का इतिहास, डी०के० प्रिंट वर्ल्ड, नै दिल्ली, 2005, पृष्ठ 48.
11. चन्द्र, कैलाश जैन धर्म का इतिहास भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ 89.
12. भागवत पुराण, 5, 3, 20
13. शिव पुराण 7, 29
14. ऋग्वेद 11, 136, 4
15. हरिवंश पुराण
16. ऋग्वेद 10, 102,
17. जैन, हरिभाई, भगवान पारसनाथ, कुंद कुंद पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई, पृष्ठ 67.